ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 2 | Issue 8 | August 2024
Available online at: https://ijmrast.com
DOI:https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i8.74

हिन्द महासागर क्षेत्र में बढ़ते सैन्य उपकरण से भारत के समक्ष उभरती सुरक्षा चुनौतियाँ

अमर कुमार पाण्डेय[1], डॉ0 स्मिता पाण्डेय[2]

[1]शोध छात्र, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, ए.एन.डी. किसान पी.जी. कालेज बभनान गोण्डा

[2]शोध निर्देशक, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, ए.एन.डी. किसान पी.जी. कालेज बभनान गोण्डा

Email: amarpandey20790@gmail.com

सारांश

हिन्द महासागर क्षेत्र (आईओआर) समकालीन अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा वातावरण में रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बनता जा रहा हैं। इस क्षेत्र की समुद्री भूगोल और प्रमुख वैश्विक शक्तियों अमेरिका, चीन, भारत, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस और ब्रिटेन और अन्य तटीय देशों के विभिन्न प्रकार के सुरक्षा हित हिंद महासागर क्षेत्र से जुड़े हैं। चीन, विशेष रूप से, आईओआर में एक बड़ी सैन्य उपस्थिति और अधिक मजबूत परिचालन पैर जमाने की कोशिश कर रहा है, जिससे क्षेत्र में संयुक्त राज्य अमेरिका की रणनीतिक रुचि बढ़ रही है। प्रत्येक देश अपनी ऊर्जा आपूर्ति और व्यापार की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए सैन्यीकरण करने में लगा हुआ है जिसे उसकी व्यापार तथा ऊर्जा आपूर्ति को सुनिश्चित किया जा सके जिसे हिंद महासागर क्षेत्र में एक रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का जन्म हुआ है। जिसने भारत भारत की सुरक्षा पर भी गंभीर रूप से प्रभाव डाला है जिस कारण भारत के समक्ष अपनी व्यापारिक सुरक्षा के साथ–साथ अन्य चुनौतियों पर भी ध्यान देना पड़ रहा है जिसमें चीन के स्ट्रिंग ऑफ पर्ल रणनीति, समुद्री आतंकवाद, तस्करी, मादक द द्रव्यों का व्यापार और पर्यावरणीय चुनौतियां शामिल हैं और व विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए भारत किस प्रकार तेजी से हिंद महासागर में एक शक्ति के रूप में उभर रहा है प्रस्तुत शोध पत्र में इसी विषय का विश्लेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक रूप से वर्णन किया गया है।

मुख्य शब्द – सैन्यकरण, भारत, अमेरिका, चीन, रूस

प्रस्तावना

हिन्द महासागर की सुरक्षा 'हिन्द महासागरीय क्षेत्र' के रूप में विकसित हुई है, जिसमें भारत अपने प्रादेशिक जल से परे सैन्य शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है। चीन और पाकिस्तान के भी हित इस क्षेत्र में निहित हैं, जो भारत की सुरक्षा के लिए संभावित खतरे पैदा कर रहे हैं। इस क्षेत्र के माध्यम से भारत का 80% व्यापार होता है, जिससे भारत की नौसेना इस क्षेत्र में शक्ति विस्तार पर ध्यान केंद्रित कर रही है। भारत के लिए अपने अन्य रणनीतिक लक्ष्यों को बाधित किए बिना सैन्य बढ़त बनाए रखना महत्वपूर्ण है। हालाँकि, इस क्षेत्र में मौजूदा सैन्य प्रतिस्पर्धा शांति और क्षेत्रीय सहयोग में बाधा डालती है। भू राजनीतिक दृष्टि से हिन्द महासागर प्रमुख वाणिज्य मार्ग, प्रमुख चोक पॉइंट, समुद्री डकैती और समुद्री अभ्यासों के कारण एक महत्वपूर्ण और सैन्य–गहन क्षेत्र है।[1] हिन्द महासागर क्षेत्र (IOR) में खतरे की

धारणाओं को बाहरी आर्थिक शोषण और आंतरिक राजनीतिक असंतोष के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। राजनीतिक असंतोष, विशेष रूप से लोकतंत्र के नवीनीकरण के सम्बन्ध में, IOR के अधिकांश तटीय और सक्रिय सदस्य राज्यों में घट रहा है। विदेशी सहायता अक्सर राज्यों को ऋणग्रस्त करने और आर्थिक सुधारों को लागू करने के इरादे से प्रदान की जाती है, जिससे आर्थिक स्थितियों के परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में सुरक्षा बल की तैनाती बढ़ रही है। संप्रभुता के मुद्दे, राष्ट्रीय हित और हिन्द महासागर क्षेत्र को बाहरी सैन्यीकरण का केंद्र बिंदु बना दिया है। क्षेत्र के बड़े राज्यों ने छोटे राज्यों के उदय को दबाने के लिए सैन्य हतोत्साहन का इस्तेमाल किया है। भारत जैसे देशों द्वारा सुरक्षा समझौते करने या समाधान के रूप में आधार अधिकारों की तलाश करने के प्रयास अप्रभावी साबित हुए हैं।

हिन्दमहासागर : एक परिचय

हिन्द महासागर क्षेत्र (IOR) रणनीतिक रूप से दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है। यह दुनिया की 40% तेल आपूर्ति और 65% अंतर्राष्ट्रीय समुद्री व्यापार का केंद्र है। इसके अलावा, समुद्री संचार मार्ग (एसएलओसी) इस क्षेत्र से होकर गुजरते हैं। इन मार्गों के माध्यम से माल का मुक्त और सुरक्षित प्रवाह न केवल क्षेत्र के देशों में बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए भी आर्थिक विकास सुनिश्चित करता है। इस प्रकार, हिन्द महासागर क्षेत्र को विश्व अर्थव्यवस्था की जीवन रेखा माना जाता है। इस क्षेत्र में विशाल ऊर्जा भंडार हैं, जिसमें दुनिया के गैस उत्पादन का 40% और दुनिया के तेल उत्पादन का 65% शामिल है। इसके अलावा, चीन ने अपनी ऊर्जा आपूर्ति लाइनों की रक्षा और अपने भू–राजनीतिक हितों को सुरक्षित करने के उद्देश्य से हिन्द महासागर में सैन्य और वाणिज्यिक सुविधाओं के निर्माण के लिए "स्ट्रिंग ऑफ़ पर्ल्स" नीति अपनाई है।[2] इस तरह की अन्य रणनीतियों के कारण, प्रमुख वैश्विक शक्तियों की हिन्द महासागर क्षेत्र में भू–राजनीतिक रुचि बढ़ रही है, और ये प्रमुख शक्तियाँ हिन्द महासागर क्षेत्र के रणनीतिक नियंत्रण के लिए प्रतिस्पर्धा कर रही हैं क्योंकि यह वैश्विक शक्तियों के बीच टकराव का बिंदु बनता है। ये घटनाक्रम इस बात के संकेत हैं कि प्रमुख शक्तियों की IOR में भू–रणनीतिक, राजनीतिक और आर्थिक रुचि निश्चित रूप से बढ़ रही है। इस तरह की रणनीतिक रुचि क्षेत्र के बढ़ते सैन्यीकरण के लिए भी जिम्मेदार है और हो रहे रणनीतिक विकास, प्रमुख शक्तियों के बीच भू–राजनीतिक टकराव, क्षेत्र के व्यापक प्राकृतिक संसाधन, बड़ी संख्या में सीमित जलमार्ग, आसान पहुंच और व्यापार–केंद्रित गतिविधियों ने IOR के महत्व को बढ़ा दिया है।

हिन्दमहासागर में बढ़ता सैन्यकरण

हिन्द महासागर क्षेत्र (IOR) में सैन्यीकरण के वर्तमान उच्च स्तर का श्रेय अमेरिका, चीन, भारत, रूस, फ्रांस, यूके और ऑस्ट्रेलिया सहित प्रमुख वैश्विक खिलाड़ियों की भागीदारी को देते हैं, जो सभी महासागर के पड़ोसी देश हैं। इन प्रमुख शक्तियों ने प्रमुख अंतरराष्ट्रीय समझौतों में भाग लेकर व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से अपने दीर्घकालिक रणनीतिक हितों को आगे बढ़ाने की कोशिश की है। प्रमुख शक्तियों की उपस्थिति को नेविगेशन की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने, प्राकृतिक आपदाओं और समुद्री डकैती की घटनाओं के दौरान सहायता प्रदान करने के लिए आवश्यक माना गया है।[3] हालांकि, आलोचकों का तर्क है कि सैन्य बलों की एकाग्रता और क्षेत्र में सैन्य ठिकानों की स्थापना से अन्य देशों से अविश्वास पैदा हो सकता है जिनके पास ऐसी सुविधाएं नहीं हैं। इस स्थिति के भविष्य में क्षेत्र के लिए नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका एक ऐसे देश की तलाश कर रहा है जो उद्देश्य–आधारित वैश्विक जुड़ाव की दृष्टि को बनाए रखने में सक्षम हो। वर्तमान में, भारत ने हिन्द महासागर क्षेत्र में कई साझेदारों और गठबंधनों को एकत्रित किया है। वे इस क्षेत्र में असंख्य सुरक्षा चिंताओं पर घनिष्ठ सहयोग में एक आशाजनक और स्थायी रुचि प्रदर्शित करते हैं।[4]

उन्हें अक्सर भारतीय नेतृत्व के साथ अधिक औपचारिक सम्बन्धों की तलाश करने की आवश्यकता होती है। संयुक्त राज्य अमेरिका की नीति निर्माताओं के अनुसार, भारत एक महत्वपूर्ण शक्ति है जो न केवल रणनीतिक ऊर्जा बातचीत और परमाणु मुद्दों पर विशेष ध्यान देने के साथ, अनुमानित यू.एस.–भारत सम्बन्धों के लिए नीतियों का आधुनिकीकरण कर सकता है। इस तरह से भारत और अमेरिका के बदलते रिश्ते तथा हिंद महासागर में चीन के तीव्र शक्ति प्रक्षेपण से इस क्षेत्र में तीव्रता से सैन्यीकरण हुआ है। हिंद महासागर में सैन्यीकरण के दो प्रमुख कारक हैं[5]–

- भू–रणनीतिक महत्व : हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) व्यापार, ऊर्जा, भू–रणनीतिक स्थिरता और प्राकृतिक संसाधनों के लिहाज से दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है।
- ऊर्जा तथा अन्य संसाधन की उपलब्धता : मॉरीशस, कोमोरोस, सेशेल्स, मालदीव, इंडोनेशिया, और अफ्रीकी द्वीप राष्ट्रों में उपलब्ध तेल, गैस, तथा अन्य संसाधनोंके कारण वैश्विक शक्तियों द्वारा इस क्षेत्र में अधिक रुचि ली जा रही है।

प्रत्येक देश अपनी ऊर्जा आपूर्ति को सुरक्षित करने के लिए तथा कच्चे माल की प्राप्ति के कारण इस क्षेत्र में अपनी आपूर्ति की सुरक्षा के लिए सैन्यीकरण की होड में लगा हुआ है जिसने इस क्षेत्र को रणनीति दृष्टि से महत्वपूर्ण कर दिया है।

सैन्यकरण के बढ़ने के कारक

हिन्द महासागर क्षेत्र में सैन्यीकरण में वृद्धि के महत्वपूर्ण कारकों में से साम्यवादी चीन का तीव्रता से उदय है जो अपनी ऊर्जा आपूर्ति को सुरक्षित करने के नाम पर अपनी नौसैनिक क्षमताओं में भारी निवेश कर रहा हैं। चीन ने इस तरह अपनी नौसैनिक रणनीतियों को सक्षम बनाया जो दुनिया भर में एक वाणिज्यिक और नौसैनिक पदचिह्न बनाने के लिए, विशेष रूप से लाल सागर और हिन्द महासागर के मार्ग जैसे अंतरराष्ट्रीय चोक पॉइंट्स में चीन की ऊर्जा आपूर्ति को सुरक्षित कर सके। चीन इन देशों में सड़क बुनियादी ढांचे का निर्माण करने के लिए मुख्य निवेशक बन गया।[6] चीन कारण से हिन्द महासागर क्षेत्र में बढ़ते सैन्यीकरण की ओर ले गया है और इससे हिन्द महासागर की अन्य वैश्विक शक्तियों ने भी अपना ध्यान इस तरफ आकर्षित किया है। हिन्द महासागर क्षेत्र में मुख्य बाहरी राजनयिक इकाई के रूप में तीन से अधिक वर्षों के भीतर रूस की त्वरित वापसी इसकी सैन्य क्षमता पर आधारित है। संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रबुद्ध स्वार्थ पर आधारित IOR की संशोधित उदार सुरक्षा संरचना को एक बार ध्वस्त कर दिए जाने के बाद इसे केवल चीन या रूस ही सफलतापूर्वक आगे बढ़ा सकते हैं।

हिन्द महासागर क्षेत्र में बाहरी शक्तियों की भागीदारी सैन्यीकरण में वृद्धि को प्रेरित करने वाला एक प्रमुख कारक है। उनके प्रभाव ने प्रतिस्पर्धा और रणनीतिक हितों को बढ़ावा दिया है, जिसके परिणामस्वरूप हथियारों की होड़ और क्षेत्र में अधिक सैन्य उपस्थिति हुई है। इससे सैन्य ठिकानों और सुविधाओं की स्थापना हुई है, जिससे सैन्यीकरण में और वृद्धि हुई है। बाहरी शक्तियों के बढ़ते प्रभाव ने क्षेत्र में नौसेना और सैन्य क्षमताओं के आधुनिकीकरण और विस्तार को भी बढ़ावा दिया है, जिससे सैन्य अभ्यास और संयुक्त अभियानों में वृद्धि हुई है।[7] इसके अतिरिक्त, उनकी उपस्थिति के परिणामस्वरूप हिन्द महासागर क्षेत्र के देशों के साथ हथियारों की बिक्री और रक्षा साझेदारी में वृद्धि हुई है, जिससे सैन्यीकरण की गतिशीलता को आकार मिला है।

सैन्यकरण के बढ़ने के प्रभाव

हिन्द महासागर क्षेत्र (IOR) अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण वैश्विक मानचित्र पर सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है। इस क्षेत्र में कुल 36 तटीय और द्वीपीय देश हैं, जिनके किनारे 50 प्रमुख, मध्यम और छोटे बंदरगाह हैं।

आधुनिक समय में, IOR एक महत्वपूर्ण समुद्री व्यापार मार्ग के रूप में उभरा है, जिसका न केवल वैश्विक अर्थव्यवस्था पर बल्कि वैश्विक रणनीतिक संतुलन पर भी गहरा प्रभाव है। लंबे समय से IOR वैश्विक व्यापार और वाणिज्य का केंद्र था। एडमिरल अल्फ्रेड टी. महान ने हिन्द महासागर के सीमांत समुद्रों को "विश्व के प्रभुत्व की ओर जाने वाली गलियाँ" के रूप में वर्णित किया।[8] सैन्यीकरण से निम्नांकित प्रभाव पड़े हैं–

1. **समुद्री अवसंरचना विकास** : हिंद महासागर क्षेत्र के देश नौसेना बेस, निगरानी प्रणाली और बंदरगाह सुविधाओं सहित समुद्री अवसंरचना में निवेश कर रहे हैं। यह विकास उनकी नौसेना क्षमताओं और रणनीतिक पहुंच को बढ़ाता है जो तीव्रता से सैन्यीकरण को बढ़ावा मिला है

2. **भू–राजनीतिक प्रतिद्वंद्विताः** हिंद महासागर प्रमुख शक्तियों के बीच भू–राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता का एक रंगमंच बन गया है। चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) और इसकी "स्ट्रिंग ऑफ़ पर्ल्स" रणनीति ने क्षेत्र में ऋण जाल कूटनीति और प्रभाव के बारे में चिंताएँ बढ़ा दी हैं। भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य देश इन घटनाक्रमों पर बारीकी से नज़र रख रहे हैं।

3. **सुरक्षा सहयोगः** विभिन्न देशों की नौसेनाएँ सुरक्षा बढ़ाने और समुद्री डकैती, अवैध मछली पकड़ने और तस्करी जैसे आम खतरों का मुकाबला करने के लिए हिंद महासागर में संयुक्त अभ्यास और गश्त करती हैं। ये सहकारी प्रयास क्षेत्र में स्थिरता और शांति में योगदान करते हैं।

4. **संसाधन प्रतिस्पर्धा** : हिंद महासागर तेल, गैस और खनिजों सहित प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है। जैसे–जैसे मांग बढ़ती है, देश इन संसाधनों पर कब्ज़ा करने और उन पर नियंत्रण पाने के लिए होड़ करते हैं। यह प्रतिस्पर्धा तनाव और संघर्ष को जन्म दे सकती है।

5. **पर्यावरणीय चुनौतियाँः** जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और अत्यधिक मछली पकड़ने से हिंद महासागर का पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित होता है। नौसेनाएँ पर्यावरणीय मुद्दों की निगरानी और समाधान करने में भूमिका निभाती हैं, जिससे समुद्री संसाधनों का सतत उपयोग सुनिश्चित होता है।

भारत के समक्ष उभरती सुरक्षा चुनौतियाँ

भारत को नौसेना के ठिकानों, शिपयार्ड और निगरानी प्रणालियों सहित अपने नौसैनिक बुनियादी ढांचे में निवेश जारी रखने की आवश्यकता बढ़ गई है। इन सुविधाओं को मजबूत करने से क्षेत्र में सुरक्षा खतरों की निगरानी और उनका जवाब देने की भारत की क्षमता बढ़ेगी। पड़ोसी देशों के साथ सहयोग करना और समुद्री गतिविधियों पर खुफिया जानकारी साझा करना महत्वपूर्ण है। एक मजबूत तटीय निगरानी नेटवर्क स्थापित करने से समुद्री डकैती, तस्करी और मानव तस्करी जैसी अवैध गतिविधियों का पता लगाने और उन्हें रोकने में मदद मिल सकती है जिसके लिए भारत निरंतर अपनी शक्ति विस्तार में लगा हुआ।[9] पर्यावरण संरक्षण के साथ आर्थिक विकास को संतुलित करना भी एक गंभीर चुनौती है। भारत को नीली अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देते हुए अपने समुद्री संसाधनों का स्थायी रूप से प्रबंधन करने जिससे वह मत्स्य पालन, जलीय कृषि और अपतटीय ऊर्जा उत्पादन शामिल हैं। चीन का हिंद महासागर क्षेत्र में बढ़ता प्रभाव भारत के लिए एक मुश्किल सवाल बन गया है। चीन की नौसेना की उपस्थिति, नौसैनिक आयोजन, और उनके नौसैनिक बेस भारत के लिए चुनौती हैं।

सामुद्रिक सुरक्षा चुनौतियाँ

भारत हिन्द महासागर में कई तरह की उभरती समुद्री और तटीय सुरक्षा चुनौतियों का सामना कर रहा है। अपारंपरिक और विषम समुद्री खतरे भारतीय कानून प्रवर्तन और सुरक्षा एजेंसियों के लिए बड़ी चुनौती पेश करते हैं।

समुद्री डकैती, तस्करी, अंतरराष्ट्रीय अपराध और जहाजों और बंदरगाहों पर आतंकवादी हमलों की बढ़ती घटनाएं समुद्री व्यापार के लिए गंभीर खतरा पैदा करती हैं। भारत के नौवहन जो 48 देशों के 95 क्षेत्रों में फैले अपने 90% से अधिक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को अंजाम देते हैं, हिन्द महासागर या तटवर्ती राज्यों में स्थित हैं, जो उच्च स्तर की राजनीतिक अस्थिरता और संघर्षों से ग्रस्त हैं।[10] भारत का लगभग 90% तेल आयात और वित्तीय लेन–देन समुद्र के रास्ते होता है। इसलिए, हिन्द महासागर की सुरक्षा भारत के लिए महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हित है।

हिन्द महासागर क्षेत्र में सैन्यीकरण से क्षेत्रीय नौसेनाओं के नौसैनिक प्लेटफार्मों और लड़ाकू क्षमताओं में वृद्धि हुई है। निरंतर सैन्य निर्माण, दुनिया की कुछ सबसे व्यस्त समुद्री संचार लाइनों की उपस्थिति और संकीर्ण चोक पॉइंट्स के कारण अवरोधन के प्रति उनकी भेद्यता, बड़ी अतिरिक्त–क्षेत्रीय शक्तियों से निकटता और वैश्विक समुद्री कॉमन्स की उपस्थिति हिन्द महासागर को संघर्षों और खतरों के लिए विशेष रूप से संवेदनशील क्षेत्र बनाती है।[11] क्षेत्र में अतिरिक्त–क्षेत्रीय शक्तियों की इन खतरों में से कुछ के प्रबंधन में प्रतिक्रिया देने और सक्रिय रूप से हाथ मिलाने की प्रवृत्ति और बढ़ी हुई दृश्यता ने हिन्द महासागर को वैश्विक प्रतिस्पर्धा का एक प्रमुख केंद्र बना दिया है। हिन्द महासागर क्षेत्र में सैन्यीकरण द्वारा उत्पन्न कथित उभरते खतरों और भारत के समुद्री सुरक्षा हितों को निम्नलिखित बिंदुओं से समझ सकते हैं[12]–

1. भारत अपने समुद्री क्षेत्र में कई सुरक्षा चुनौतियों का सामना कर रहा है जिसमें उसे अपने समुद्री हितों की रक्षा करना और नौवहन की स्वतंत्रता सुनिश्चित करना सर्वोच्च प्राथमिकता है।
2. भारत को समुद्री क्षेत्र में अन्य क्षेत्रीय शक्तियों के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने की चुनौती का भी सामना करना पड़ रहा है। जिसमे चीन सबसे महत्वपूर्ण है वह अपनी विभिन्न रणनीति द्वारा हिन्द महासागर में भारत को घेरने का प्रयास कर रहा है।
3. भारत के लिए अपने विशेष आर्थिक क्षेत्र का समुचित दोहन भी चुनौती पूर्ण है।
4. समुद्री डकैती, आतंकवाद और तस्करी जैसी अवैध गतिविधियाँ भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करती हैं।
5. भारत की समग्र समुद्री सुरक्षा रणनीति के लिए अपने बंदरगाहों और तटीय क्षेत्रों की सुरक्षा सुनिश्चित करना तथा अन्य शक्तियों के साथ समन्वय बनाए रखते हुए क्षेत्र में अपने राष्ट्रीय हितों का विस्तार करना भी एक कठिन चुनौती है।
6. भारत के लिए अपनी समुद्री सुरक्षा चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान करने के लिए अन्य देशों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग करना महत्वपूर्ण है।

उपरोक्त चुनौतियोंसे स्पष्ट है कि हिंद महासागर में भारत के समक्ष महत्वपूर्ण चुनौतियां हैं परंतु भारत निरंतर विकास पथ पर अग्रसर है तथा हिंद महासागर के विभिन्न संगठनों और राष्ट्रों के साथ मिलकर भारत इन चुनौतियों से निपटाने का कार्य कर रहा है।

पर्यावरणीय सुरक्षा चुनौतियाँ

जलवायु परिवर्तन हिन्द महासागर क्षेत्र के लिए सैन्यीकरण के मुद्दे के अलावा एक महत्वपूर्ण और अनिश्चित सुरक्षा चुनौती पेश करता है। चक्रवात, सुनामी और समुद्र के स्तर में वृद्धि जैसे मौसम के पैटर्न में बदलाव से कुछ देशों में पानी, भोजन और भूमि संसाधनों पर मौजूदा तनाव और भी बदतर हो सकता है। ये पर्यावरणीय प्रभाव सामाजिक दबावों और कमज़ोर राज्य संरचनाओं के साथ परस्पर क्रिया कर सकते हैं, संभवतः सामाजिक व्यवस्था और सार्वजनिक सेवाओं को बनाए रखने की राज्य की क्षमता को कमज़ोर कर सकते हैं।[13] नतीजतन, यह पड़ोसी देशों और अंतरराष्ट्रीय

अभिनेताओं के लिए संभावित अस्थिरता और सुरक्षा जोखिम पैदा कर सकता है। हिन्द महासागर के तटवर्ती कई देश अपने छोटे आकार, दूरस्थ स्थान, प्राकृतिक संसाधनों पर भारी निर्भरता और कमज़ोर शासन संस्थानों के कारण आर्थिक और सामाजिक रूप से कमज़ोर हैं। नतीजतन, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव उनकी कमज़ोरियों को बढ़ा सकते हैं, खासकर मालदीव, श्रीलंका, बांग्लादेश और भारत के पूर्वी तट जैसे देशों में। ये क्षेत्र अपनी कम ऊंचाई और मौजूदा सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों के कारण विशेष रूप से जोखिम में हैं।

निष्कर्ष

हिन्द महासागर क्षेत्र (हिन्द महासागर क्षेत्र) में बढ़ते सैन्यीकरण ने महाशक्तियों की बड़ी भू–रणनीतिक स्थिति को प्रभावित किया है। साथ ही, भारत ने आत्मरक्षा और अपने प्रभाव क्षेत्रों के विस्तार के लिए अपनी सामरिक स्थिति को बढ़ाने का प्रयास किया है। चीन की खतरे की धारणाओं में परिवर्तन ने संभावित आर्थिक परिणामों के साथ सैन्य बहिष्कार की आशंकाओं को जन्म दिया है। एशियाई वित्तीय संकट के झटकों के मद्देनजर, अन्य बातों के अलावा, क्षेत्र में एक स्थिर भू–राजनीतिक वातावरण के लिए महाशक्तियों, जिनमें भारत भी शामिल है, के हितों के बीच अभिसरण बढ़ रहा है। परिणामस्वरूप, अमेरिका ने अपने प्रमुख गैर–नाटो सहयोगी की स्थिति का पुनर्मूल्यांकन किया है। इसने धीरे–धीरे अपनी नीति को पाकिस्तान–प्रभुत्व से बदलकर भारत के परमाणु परीक्षणों के बाद के सम्बन्धों में बदल दिया है। इसके साथ–साथ सुरक्षा मामलों में अधिक द्विपक्षीय, क्षेत्रीय या बहुपक्षीय सहयोग संगठन उत्पन्न हुए हैं। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। इसने अपने परमाणु कार्यक्रम और अपने शांतिपूर्ण आर्थिक विकास के संदर्भ में जिम्मेदार व्यवहार का प्रदर्शन किया है। वैश्विक समुदाय द्वारा इसकी मान्यता इसे अपने स्वयं के बड़े राष्ट्रीय हित में स्थापित और उभरती हुई विश्व शक्तियों के साथ सार्थक रूप से बातचीत करने में सक्षम बनाएगी। सैन्यीकरण भारत के लिए चिंता का एक प्रमुख क्षेत्र है, क्योंकि समय–समय पर ऐसी असंख्य रिपोर्टें आती रहती हैं कि हिन्द महासागर क्षेत्र में लगभग हर देश प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, सक्रिय या निष्क्रिय रूप से सैन्यीकरण को अपना रहा है। भारत की खतरे की धारणा सर्वविदित है, और विशेष रूप से हिन्द महासागर क्षेत्र में इसकी भौगोलिक उपस्थिति और सीमाएँ इसे मुख्य रूप से एक नीली जल नौसेना पर निर्भर रहने के लिए बाध्य करती हैं। क्षेत्र का सैन्यीकरण से हिन्द महासागर क्षेत्र के तटीय राज्यों के साथ भारत के सम्बन्ध को भीकाफी हद तक प्रभावित करती हैं जिससे रणनीतिक, वित्तीय और रसद सम्बन्धों को बढ़ाता है, और सबसे बढ़कर, हिन्द महासागर क्षेत्र को शांति के क्षेत्र के रूप में प्रभावित करता है। इसके अलावा, सैन्यीकरण से अनावश्यक और अनावश्यक हथियारों की तैनाती होती है, और यह क्षेत्रीय सह–अस्तित्व, शांति और सुरक्षा के नैतिक ताने–बाने को प्रभावित करता है।

हिन्द महासागर क्षेत्र में व्यापक और समावेशी नीति प्रतिक्रियाओं के साथ आने के लिए अपनी नीति प्रतिबद्धताओं की पहचान करें। भारत ने पहले ही हिन्द महासागर रिम एसोसिएशन (IOR) पहल के माध्यम से ऐसी प्रतिक्रिया को व्यवस्थित करने का प्रयास किया है। हालाँकि, इन पर अधिकांश क्षेत्रीय तटीय देशों की ओर से बहुत ही कम प्रतिक्रिया मिली। इसने उम्मीद के मुताबिक कोई आशाजनक प्रतिक्रिया नहीं दी। नेतृत्व की भूमिका छोड़ने और/या ऐसे नेतृत्व गुणों को कम करने के बजाय, भारत को यह दिखाना चाहिए कि उसके पास व्यापार, आर्थिक निवेश, सुरक्षा, स्थापना और आपसी समझ में घनिष्ठ सहयोग जैसे अन्य उपलब्ध विकल्पों का उपयोग करके सामूहिक रूप से नेतृत्व करने और क्षेत्रीय हितधारकों को शामिल करने की क्षमता है।

सन्दर्भ:

[1] Thakur, S., Mondal, I., Bar, S., Nandi, S., Ghosh, P. B., Das, P., & De, T. K. (2021). Shoreline changes and its impact on the mangrove ecosystems of some islands of Indian Sundarbans, North-East coast of India. Journal of Cleaner Production, 284, 124764. [HTML]

[2] Crochelet, E., Barrier, N., Andrello, M., Marsac, F., Spadone, A., & Lett, C. (2020). Connectivity between seamounts and coastal ecosystems in the Southwestern Indian Ocean. Deep Sea Research Part II: Topical Studies in Oceanography, 176, 104774. [HTML]

[3] Marsac, F., Galletti, F., Ternon, J. F., Romanov, E. V., Demarcq, H., Corbari, L., ... & Ménard, F. (2020). Seamounts, plateaus and governance issues in the southwestern Indian Ocean, with emphasis on fisheries management and marine conservation, using the Walters Shoal as a case study for implementing a protection framework. Deep Sea Research Part II: Topical Studies in Oceanography, 176, 104715. sciencedirect.com

[4] Choi, T. H. T. (2024). The Royal Canadian Navy: Acute Operational Demands Amidst Force Structure Recapitalisation. Coalition Navies during the Korean War. [HTML]

[5] Tarapore, A. (2020). Building strategic leverage in the Indian ocean region. The Washington Quarterly. amazonaws.com

[6] Bhattacharya, S. B. (). THE STRATEGIC SIGNIFICANCE OF THE INDIAN OCEAN FOR INDIA'S SECURITY IN THE 21ST CENTURY: AN OVERVIEW. JOURNAL OF POLITICS. dujop.in

[7] White, J. T. (). China's Indian Ocean ambitions: Investment, influence, and military advantage. Washington. brookings.edu

[8] Singh, S. (2021). India’s Approach to Security Challenges in the Indian Ocean Region. Annual Report on the Development of the Indian Ocean Region (2019) Assessment of Indian Ocean International Environment, 85-101. [HTML]

[9] Grare, F. & Samaan, J. L. (2022). The Indian Ocean as a new political and security region. academia.edu

[10] Agarwala, N. (2021). Advances by China in deep Seabed mining and its security implications for India. Australian Journal of Maritime & Ocean Affairs. [HTML]

[11] Upadhyay, D. K., & Mishra, M. (2020). Blue economy: Emerging global trends and India’s multilateral cooperation. Maritime Affairs: Journal of the National Maritime Foundation of India, 16(1), 30-45. academia.edu

[12] Bueger, C., Edmunds, T., & McCabe, R. (2020). Into the sea: capacity-building innovations and the maritime security challenge. Third World Quarterly. coventry.ac.uk

[13] Agarwala, N. (2022). Powering India's Blue Economy through ocean energy. Australian Journal of Maritime & Ocean Affairs. [HTML]

Cite this Article

अमर कुमार पाण्डेय, डॉ0 स्मिता पाण्डेय, “हिन्द महासागर क्षेत्र में बढ़ते सैन्य उपकरण से भारत के समक्ष उभरती सुरक्षा चुनौतियाँ”, *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 2, Issue 8, pp. 12-18, August 2024.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i8.74*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.